सं. मो. बि./फरीदाबाद/5-85/10267.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० कनवल इण्डस्ट्रीज, 5-सी/46, एव० आई० टी०, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री राम नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 ब्रून, 1968, के साथ पढ़ते हुए मधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-88 श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मधिनियम की धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनगय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मणवा संबंधित मामला है :---

क्याश्री राम नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि /फरीदाबाद/5-85/10274 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. ृक्षनवल इण्डस्ट्रीज, 5सी/46 एन. ग्राई. टी. फरीदाबाद, के श्रमिक उमेश चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, भव, भौद्योगिक विवाद भिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई भिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये प्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निगंय के लिथे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो. विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री उमेश चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो. वि./फरीवाबाद/5-85/10281.—चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैं. कैनवल इण्डस्ट्रज, 5सी/46 एन. श्राई. टी., फ़रीदावाद के श्रीमक राजेग्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करेना वांछनीय समझते हैं 🕏

इस लिये, ग्रब ग्रौद्योगिक विवाद प्रधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिमचना सं. 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिखे निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राजेग्द्र की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. मो. वि./फ़रीदाबाद/5-85/10288.—चूंकि द्वरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मेलर्ज कनवल इण्डस्ट्रीज 5सी/46 एप. माई. टी. फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री उमा शंकर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामला में कोई मोधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतू निर्दिष्ट करवा वाछनीय समझते हैं ;



इसलिए, श्रव श्रीद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करत हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठिसूचना सं. 5415—3—श्रम 86/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये श्रिष्ठसूचना सं. 11495—जी—श्रम 88—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठ— नियम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री उमां शंकर की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं;तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./फरीदाबाद/5/85/10295.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कनवल इण्डस्ट्रीज, 5 सी/46 एनं., ग्राई. टी. फरीदाबाद के श्रमिक श्री दीना नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, भव, भौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, को धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं 11495-जी-श्रम 88श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उसके सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भवना सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दीना नाथ की सेवाभ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./फरीदाबाद/5-85/10302 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० कनवल इण्डस्ट्रीज, 5सी/46, एन. आई. टी., फरीदाबाद, के श्रीमक भी राज किशोर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई शोदोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपालः विवाद को ज्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाखनीय समझते हैं ;

इसलिए, भव, घोद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिष्ठसूचना सं. 5415-3-अम 6 8/15254, दिनांक 20 जून, 1968, वि साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला क्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भ्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री राज किशोर की सेवाभों का समापन त्यायोखित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 15 मार्च, 1985

सं. भ्रो.वि /भिवानी / 74-84 / 10472 - चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी (2) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, के श्रीमिक श्री सुभाष चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बा लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

.श्रीर चूंकि हरियाणा ≒के 'राज्यपाल विवाद ⊤को न्यायनिर्णय ∤हेतु निर्विष्ट करना 'वाछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियमं, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई । शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संरकारी प्रधिसूचना सं 9641—1—श्रम/70/32573, दिनांक 6 निवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं॰ 3864-ए-एस-प्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की धारा 7 के ब्राधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री सुभाष चन्द्र, की सेवाओं का समापन न्यायीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?